गोकुलदास संस्कृत ग्रन्थमाला

६५

****

गायत्रीरहस्यम्

लेखक

(स्व०) पं० वेणीराम शर्मा गौड वेदाचार्य

Scanned by TapScanner

अनुक्रमणिका

गायत्री-शब्दार्थ	३	गायत्रीके विविध प्रयोग	१०६
गायत्री-मन्त्र और उसका अर्थ	५	गायत्री-मन्त्र-जप-सिद्ध एक ऋषि-कुमारकी कथा	११४
गायत्रीमन्त्रका स्वरूप	,,	ब्रह्माजीके यज्ञका वर्णन	११५
गायत्री-मन्त्रकी उत्पत्ति	९	गायत्रीके उच्चारण और जपका महत्त्व	११७
गायत्रीके विभिन्न नाम	११	गायत्रीके स्वयं पाठ करनेका और दूसरोंसे श्रवण करनेका महत्त्व	११८
गायत्रीके ध्यान	१२	'गायत्री' शब्दकी बार-बार आवृत्ति करनेका महत्त्व	,,
दूसरे ध्यान	१३	गायत्री-मन्त्रके गुणोंके कीर्तन सुननेका फल	,,
त्रिकाल गायत्री-ध्यान	१५	गायत्री-मन्त्रके श्रवणका महत्त्व	११९
गायत्री-मन्त्रसे द्विजत्वकी प्राप्ति	१६	गायत्रीके स्मरणका महत्त्व	,,
गायत्रीके अधिकारी	१८	गायत्रीके ध्यानका महत्त्व	,,
गायत्रीके अनधिकारी	१९	चारों वेदोंमें गायत्री-मन्त्र	,,
गायत्रीसे रहित ब्राह्मण निन्दनीय है	२२	वर्णत्रयकी भिन्न-भिन्न गायत्री	१२०
गायत्रीकी उपासना और उसका महत्त्व	२३	वर्णत्रयकी गायत्रीके मन्त्र	१२१
गायत्री-उपासनाके अनेक भेद	३७	वेदाधिकार-रहितोंका गायत्री-मन्त्र	१२२
वेदोंमें गायत्रीका महत्त्व	३८	ब्रह्म-गायत्री	,,
गायत्री वेदजननी	४२	शताक्षरा गायत्री	१२३
गायत्री और वेद	४३	गायत्री-मन्त्रके उच्चारणकी विधि	,,
गायत्री और सूर्य	४६	गायत्रीके ऋषि, छन्द, देवता आदिका ज्ञान आवश्यक है	१२४
गायत्री और ब्राह्मण	४८	गायत्रीके ऋषि, छन्द, देवता आदिके जाननेसे लाभ	१२५
सन्ध्या और गायत्री	५५	गायत्रीके ऋषि, छन्द, देवता आदिके न जाननेसे हानि	,,
गायत्रीविषयक विविध प्रश्नोंके उत्तर	६१	गायत्रीके ऋषि, छन्द और देवताका विवरण	१२६
गायत्री-जपका महत्त्व	६५	गायत्रीके २४ वर्णोंके २४ ऋषि	१२७
गायत्री-जपकी आवश्यकता	७८	गायत्रीके २४ वर्णोंके २४ छन्द	,,
सप्रणव और सव्याहृति गायत्री-जपका महत्त्व	८१		
गायत्री-जपद्वारा विविध पापोंका प्रायश्चित्त	८३		
गायत्रीके कोटि, लक्ष, सहस्र आदि जप करनेसे विविध पापोंसे मुक्ति	८८		
गायत्री-मन्त्रद्वारा हवनका विविध फल	९५		

Scanned by TapScanner

गायत्रीके २४ वर्णोंके २४ देवता १२८
गायत्रीके २४ वर्णोंकी २४ शक्तियाँ १३१
गायत्रीके २४ वर्णोंके २४ रूप ,,
गायत्रीके २४ वर्णोंके २४ तत्त्व १३२
जपके पूर्वकी गायत्रीकी २४ मुद्राएँ १३३
गायत्रीकी २४ मुद्राएँ करनेकी विधि ,,
जपके बादकी गायत्रीकी ८ मुद्राएँ १३६
गायत्रीकी आठ मुद्राएँ करनेकी विधि १३७
गायत्रीके चतुर्थ चरणकी महामुद्राएँ १३८
मुद्राओंके प्रदर्शनकी और इनके ज्ञानकी आवश्यकता १३९
मुद्राओंको न जाननेसे हानि ,,
गायत्रीके २४ वर्णोंका विवरण १४०
गायत्रीके चौबीस वर्णोंके द्वारा शरीरका न्यास ,,
न्यासकी आवश्यकता १४२
गायत्री-शापविमोचन का विधि ,,
गायत्री-शापोद्धारकी आवश्यकता १४४
गायत्री और ओङ्कार ,,
गायत्री और ओङ्कारके जपका महत्त्व १४५
गायत्री, सावित्री और सरस्वतीका निर्वचन ,,
जप-शब्दार्थ १४६
जपके लक्षण १४७
जपयज्ञका महत्त्व ,,
मन्त्र-जपका महत्त्व १४९
जप भी स्वाध्याय है १५०
जप-सम्पत्तिके प्रधान कारण ,,
जपके शत्रु १५१
भगवन्नाम-जपकी विधि ,,
गायत्री-जपकी विधि १५२
गायत्री-मन्त्रके त्रैकालिक जपका विधान १५६
त्रिकाल सन्ध्यामें गायत्री-जप करनेकी विधि ,,
जपमें त्रिपदा और गायत्री-पूजनमें चतुष्पदा गायत्री १५७
कामना-भेदसे गायत्री-जपके लिये दिशाएँ १५८
गायत्री-जप वस्त्रसे ढककर करना चाहिये ,,
गायत्री-जपके बाद शताक्षरा गायत्री और ब्रह्मगायत्रीका जप भी आवश्यक है १६०
जपके बाद आसनके नीचेकी मृत्तिकाको मस्तक लगाना चाहिये १६१
विधिहीन जप निष्फल होता है ,,
जपके समय गायत्री-मन्त्रार्थके स्मरणसे पापोंकी निवृत्ति १६२
जपके समय गायत्रीके ऋषि, छन्द, देवताका ध्यान और ज्ञान आवश्यक है ,,
जपके अन्तमें परब्रह्मका स्मरण करना आवश्यक है १६३
जपके समय मौन भंग होनेपर विशेष विधान ,,
जपादि कर्ममें त्रुटि होनेपर कर्तव्य १६४
गायत्री-जपमें प्रणवका विचार ,,
जपके भेद और उनके उच्चारणकी विधि १६५
मानसिक जपमें कोई नियम नहीं है १६८
सप्तव्याहृतिसे सम्पुटित लक्ष गायत्री-मन्त्रके जपसे सर्वविध फलोंकी प्राप्ति १६९
मन्त्रसिद्धिके बिना जप, होम आदि निष्फल हैं ,,
गायत्री-मन्त्र को सिद्ध करना आवश्यक है ,,
चारों आश्रमोंके लिये गायत्री-जपका विधान ,,
प्रतिदिन गायत्री-जपकी संख्याका विधान १७१

Scanned by TapScanner

काम्यकर्ममें जपसंख्याका विधान १७३
युगके अनुसार जपसंख्या ,,
आपत्तिकालमें गायत्री-जपका विधान १७४
कुछ तिथिओंमें तथा श्राद्ध, प्रदोष आदिमें गायत्री-जपका विशेष विधान ,,
सन्ध्योपासनमें गायत्री-जपकी संख्याका विधान १७५
सन्ध्योपासनमें गायत्री-जपका समय ,,
सन्ध्योपासनमें गायत्री-जपसे पापोंकी निवृत्ति १७७
जपकी संख्याका परिज्ञान आवश्यक है ,,
गणनारहित जप निष्फल है १७८
जप-गणनार्थ विहित वस्तु ,,
जप-गणनार्थ निषिद्ध वस्तु ,,
जपादिमें माला जपनेकी विधि १७९
करमाला १८०
जपके समय हाथसे माला गिर जानेपर कर्तव्य १८२
जपादिमें प्रशस्त माला ,,
जापादिमें निष्फल माला १८४
कामना-भेदसे मालाका विचार १८५
करमाला आदिसे जप करनेका विविध फल ,,
विविध प्रकारकी मालाओंका विविध फल १८६
अक्षमालाके अभावमें करमाला १८९
अक्षमाला ,,
करमाला १९०
गोमुखी (गोमुखम्) ,,
जपमालाकी मणियोंकी संख्याका विधान १९१
कामनाभेदसे जपमालाकी मणि-संख्याका विधान ,,
विविध प्रकारकी मालाके धारणका विविध फल १९२
विष्णु आदि देवताओंकी विभिन्न मालाएँ ,,
पुरश्चरणमें जपमालाका विधान १९३
रुद्राक्षकी मालामें सभी प्रकारके मन्त्रोंका जप हो सकता है ,,
जपमें अँगुलिका नियम ,,
कामनाभेदसे जपमें अँगुलिका नियम १९४
मालामें सूत्रका विधान ,,
देवताभेदसे मालामें सूत्रका निर्णय १९५
जपमें प्रतिष्ठित माला ग्राह्य है १९६
मालाके संस्कारकी आवश्यकता ,,
मालाके संस्कारकी विधि ,,
मालाकी प्रार्थना १९७
जपादिके लिये श्रेष्ठ आसन १९८
जपादिके लिये त्याज्य आसन ,,
विभिन्न आसनोंके विभिन्न फल १९९
कामनाभेदसे आसनका विधान २००
आसनका परिमाण २०१
पुरश्चरणका लक्षण ,,
पुरश्चरणके दस प्रकार २०२
पुरश्चरणकी आवश्यकता ,,
गायत्री पुरश्चरणका महत्त्व २०४
सभी प्रकारके मन्त्रोंके पुरश्चरणमें सर्वप्रथम गायत्री-जप आयश्यक है ,,
ज्ञाताज्ञात पापके क्षयके लिये सर्वप्रथम गायत्रीका जप आवश्यक है ,,
गायत्रीपुरश्चरणकर्ताके लिये देहशुद्धिके प्रकार २०५
गायत्रीपुरश्चरणकर्ताके लिये आत्म-शुद्धिकी आवश्यकता ,,
पुरश्चरणकर्ताके लिये अन्नका शुद्धिप्रकार २०६
गायत्रीपुरश्चरणकर्ताके लिये भोजनार्थ ग्रासका प्रमाण और उसकी संख्या २०७

Scanned by TapScanner

गायत्रीपुरश्चरणकर्ताके लिये आहारका नियम २०८
गायत्रीपुरश्चरणकर्ताके लिये वर्ज्य आहार २०९
पुरश्चरणकर्ताके लिये निकृष्ट अन्न ”
गायत्रीपुरश्चरणकर्ताको शूद्रके अन्नभक्षण आदिसे नरककी प्राप्ति ”
गायत्रीपुरश्चरणकर्ताके लिये नित्य अनुष्ठेय धर्म २१०
गायत्रीपुरश्चरणकर्ताके नियम २१२
पुरश्चरणकर्ताके भक्ष्याभक्ष्यका विचार २२०
पुरश्चरण प्रारम्भके लिये शुभ मुहूर्त २२१
गायत्रीपुरश्चरणके लिये शुभ मास २२२
गायत्रीपुरश्चरणादिके लिये प्रशस्त तिथि ”
गायत्रीपुरश्चरणके लिये त्याज्य मास, तिथि, वार आदि ”
गायत्रीपुरश्चरणके प्रारम्भमें त्याज्य तिथि, वार, मास आदि २२३
गायत्रीपुरश्चरणके लिये श्रेष्ठ स्थान २२४
स्थान-विशेषमें गायत्री-जपका महत्त्व २२५
पुरश्चरणके लिये गायत्री-मन्त्र-जप संख्या २२९
पर्वत आदिमें पुरश्चरणार्थ कूर्मका विचार अनावश्यक है २३०
ग्राम एवं गृह आदिमें पुरश्चरणार्थ कूर्मका विचार आवश्यक है ”
कलियुग आदि युगोंमें पुरश्चरणके लिये गायत्री-मन्त्रकी जप-संख्या २३१
जापकके लिये हवन, तर्पण आदिका विशेष विधान २३२
जापकके लिये दशांश हवनकी आवश्यकता ”
दशांश हवन न करने पर विधान २३३
दशांश हवनकी अशक्तिमें त्रैवर्णिक तथा स्त्रीका कर्तव्य ”
गायत्रीपुरश्चरणार्थ हवनीय द्रव्य २३४
गायत्री-यज्ञमें हवनार्थ गायत्री-मन्त्रका निर्णय ”
पुरश्चरणके मध्यमें सूतक होनेपर विचार ”
गायत्रीके ऋषि, छन्द, देवता आदिको जानने और न जाननेसे हानि-लाभ २३५

Scanned by TapScanner